सकारात्मक स्पंदन पुष्टि - कान्हा

Vibrant Pushti

ये तुम्हारे चरण में अर्पित करता हूँ

जो तुम छू रही हो प्रीत की रज

मुखारविंद को नैनन में वसाये

पग पग गिरिराज छूये

हर शिला पर नैनन झुकाये

आंतर मन आनंद में झूमे

पिया स्पर्शे अंग अंग

दिल गाये राधा राधा

"Vibrant Pushti"
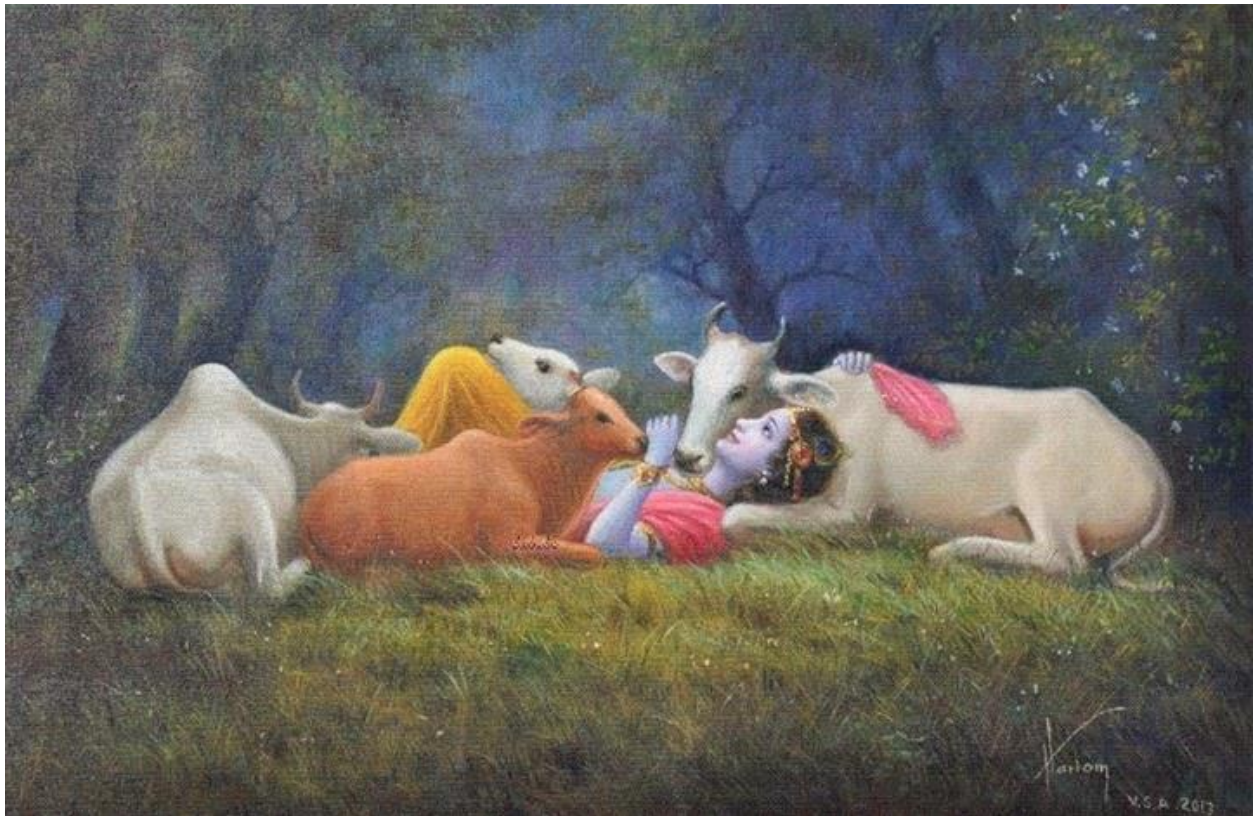
" राधा "

पता नहीं है फिर भी पता करता रहता हूँ

कोई है जो मुझे अखंड प्रीत करता है

कोई है जो मुझे अतूट शिखा रहा है

कोई है जो मुझे अपना समझ रहा है

कोई है जो मुझे अपना सबकुछ लूटा कर मुझे अपना जैसे करता रहता है

न वह स्त्री है न वह पुरुष है

न वह प्रकृति है न सृष्टि है

न वह लोक है न ब्रह्मांड है

न वह परंब्रह्म है न परमात्मा है

वह तो है केवल मेरे प्रिये!

वह तो है केवल मेरे प्रियतम!

वह तो है केवल मेरी राधा!

जो मेरे श्री कृष्ण की भी है श्री राधा!

"Vibrant Pushti"

"कृष्ण" कौन है?

"कृष्ण" क्या है?

"कृष्ण" कैसे है?

"कृष्ण" क्यूँ है?

क्या जानते है हम - एक भारतवासी या हिंदुस्तानी

क्या समझते है हम - एक भारतीय या हिंदीय

एक वार्ता

एक कहानी

एक उपदेश

एक चरित्र

एक ऐश्वर्य

एक प्रियतम

एक परमेश्वर

एक योगेश्वर

एक योद्धा

एक गौचारहा

एक भगवान

एक दूत

एक मित्र

एक कपटी

एक पुरुषोत्तम

एक ....

जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त........

चिंतन करो यहाँ तक कि खुद कृष्ण हमारे अंदर प्रकट हो जाये।

न धर्म से

न कर्म से

न धन से

न मन से

उन्हें तो केवल अपने आंतर आत्म से सँवारो

शायद वो तुम्हें कही छू जाय!

"Vibrant Pushti"

" हे जगत नियंता कृष्ण "

छुपोगे भँवर में न छुपने देंगे

जाओगे दूर न कहीं जाने ही देंगे

जन्म जन्म के फेरे ऐसे घूमेंगे

कभी तुम आगे कभी हम पीछे

कभी हम पीछे कभी तुम आगे

आगे आगे पायल गाये

पीछे पीछे मधुर बंसरी पुकारे

चले आओगी चले आओगी

यही ही किनारा हो रहेगा मिलन

जहाँ यमुना तड़पती हो

गोवर्धन तरसता हो

"Vibrant Pushti"

ओहह मेरे प्रभु!

ओ मेरे प्रभु!

प्रीत! ओहह प्रीत!

क्या है यह रीत आपकी?

क्या निधि है आपकी?

क्या अनुभूति है?

क्या आंतरिकता है?

क्या आग है?

क्या तेज है?

क्या पुकार है?

क्या दर्द है?

क्या वेदना है?

क्या आनंद है?

क्या विरह है?

कुछ है! हाँ! नही तो मुझे तड़पाती क्यूँ है?

"Vibrant Pushti"

कृपा के लिए तुम घर पहुँचोगी तब कहेंगे

अभी तो खुद को लूटावो इतना कि खुद परब्रह्म खुद नाचे

हे व्रज स्पर्शिनी!

"Vibrant Pushti"

" हे राधा ! हे प्रियतम !

तेंरे चरण में है मेरा " मैं "

हे प्रेमेश्वरी !

हे व्रजेश्वरी !

हे कृष्णेश्वरी !

"राधा"

हमारी आध्यात्मिक और आंतरिक ऊर्जा है जो संपूर्ण विशुद्ध, पवित्र, विश्वसनीय परम प्रीत है।

हमारे जीवन में

ओ राधा!

ओहह राधा!

आह राधा!

जो प्रकट होता है वह केवल और केवल

हममें जो नैतिकता है

हममें जो पुष्टता है

हममें जो निखालसता है

हममें जो साक्षरता है

हममें जो सृजनता है

हममें जो मधुरता है

हममें जो संयोगता है

हममें जो विरहता है

हममें जो तीव्रता है

हममें जो सत्यता है

हममें जो जागृतता है

हममें जो माधुर्यता है

यही हमारी "राधा" है

हमारी राधा हमारे आंतर आनंद से ही प्रकट है।

ओ मेरी राधा!

ओ प्रिय राधा!

ओ प्रियतम राधा!

"Vibrant Pushti"

राधा!

कभी ऐसे ही अपने आप अकेले बैठे बैठे पुकारो

क्या होगा?

अपनी नयन से देखना

अपनी साँस से छूना

खुद में कुछ परिवर्तन पाओगे

यह परिवर्तन की अनुभूति "राधा" है।

"Vibrant Pushti"

एक रूप एक रंग एक ही श्याम

"राधा" को गोपि भाव

"कृष्ण" को रसो वैः सः कहते है।

क्या है यह माधुर्य भाव और शरणागत भाव?

श्री राधा! "राधा" "राधा"

श्री कृष्ण! "कृष्णा" "कृष्णा"

क्या है यह "राधा"

क्या है यह "कृष्ण"

डूबना है तो राधा के नयन में

खोना है तो कृष्ण के रंग में

हे राधा!

हे कृष्ण!

"Vibrant Pushti"

बादलों को टकराके नैनों में ज्योत जाग उठी

तेरे मुखड़े की अदा पर हलकी सी लहर दौड़ उठी

झुल्फ़े लहराने लगी, पलके फ़रफराने लगी

तेरे होठों से पुकार उठने लगी

साँसों की कसम

धड़कन की कसम

टपक टपक बूँद गिरते तन मन में आग सुलग उठी

तेरे आँचल की उड़ान से रोम रोम प्यास तड़प उठी

मेरी प्रीत गा उठी

लज्जा की कसम

छुआ छुये की कसम

"Vibrant Pushti"

जुगनी रात

टिमटिमाती रात

दीपक रात

उर्जित रात

उजली रात

जागती रात

भड़कती रात

जलती रात

विरह रात

अँसुवन रात

जपती रात

खोजती रात

उठती रात

ढूँढती रात

आह रात

पुकारती रात

ओझल रात

तृष्णा रात

अपलक रात

इंतेज़ार रात

कैसी कैसी रात

भिन्न भिन्न रात

कोई भक्त - कोई प्रियतम - कोई ज्ञानी - कोई तपस्वी - कोई सिद्ध - कोई अभद्र - कोई अमानवीय, कोई आत्मीय

ऐसी है रात

ऐसी है फरियाद

जो समझे उन्हें ही स्पर्शे

स्पर्शते स्पर्शते लूट जाती है राते

तरसते तरसते बह जाती है राते

"Vibrant Pushti"

कभी देखा है

अपने पलकों में क्या छिपा है

अपने नयनों में क्या छिपा है

अपने साँस उच्छवास में क्या छिपा है

अपने अधरों में क्या छिपा है

अपने मुखड़े में क्या छिपा है

अपने झुल्फों की मांग में क्या छिपा है

अपने माथे की पघडी में क्या छिपा है

अपने भाल के तिलक में क्या छिपा है

अपने कर्णो के झुमखे में क्या छिपा है

अपने उंगली के अंगूठी में क्या छिपा है

अपने बाहों के बाजुबंध में क्या छिपा है

अपने हाथों के कंगना में क्या छिपा है

अपने पाँवो की पायल में क्या छिपा है

अपने तन के आँचल में क्या छिपा है

अपने मन के तरंग में क्या छिपा है

अपने धन के विश्वास में क्या छिपा है

अपने कर्म के पुरुषार्थ में क्या छिपा है

अपने धर्म की संस्कृति में क्या छिपा है

अपने जीवन के कर्म में क्या छिपा है

अपने जन्म के सत्य में क्या छिपा है

"Vibrant Pushti"

" राधे "

बरसते बादल गरजते बादल

कुछ देते जाते है

कुछ कहते जाते है

बरसते बादल गरजते बादल

कुछ स्पर्शाते जाते है

कुछ धड़काते जाते है

बरसते बादल गरजते बादल

कुछ भिगोते जाते है

कुछ जगाते जाते है

बरसते बादल गरजते बादल

कुछ बहाते जाते है

कुछ चमकाते जाते है

बरसते बादल गरजते बादल

कुछ थरथराते जाते है

कुछ ठंड़ठंड़ाते जाते है

बरसते बादल गरजते बादल

कुछ नचाते जाते है

कुछ गिराते जाते है

बरसते बादल गरजते बादल

कुछ झुलाते जाते है

कुछ हिलाते जाते है

बरसते बादल गरजते बादल

कुछ जीतते जाते है

कुछ हारते जाते है

बरसते बादल गरजते बादल

कुछ खोते जाते है

कुछ पाते जाते है

बरसते बादल गरजते बादल

कुछ पिलाते जाते है

कुछ तरसाते जाते है

बरसते बादल गरजते बादल

कुछ मिलाते जाते है

कुछ बिछड़ाते जाते है

बरसते बादल गरजते बादल

कुछ   जाते है

कुछ   जाते है

"Vibrant Pushti"

यमुना सा मोहन

व्रज रज सी राधा

राधा बसी वहाँ गोवर्धन बसा

यमुना बसी वहाँ वृंदावन बसा

इसीलिए तो

कहते है

गोकुल बरसाना राधा कान्हा

नंदगाँव मथुरा श्याम श्यामा

यही रीत है प्रीत आत्म की

जो जन्म जन्म जिये हर ब्रह्मांड की

राधा बसी वहाँ गोवर्धन बसा

अर्थात तुमने इतना स्मरण करवाता हूँ कि श्री गोवर्धन की रचना श्री प्रभु ने श्री राधा के कहने से रची थी

पता नही ये सब अक्षर और शब्द कैसे जुड़ जाते है

जब तक जी रहा हूँ

तेरा इंतज़ार करता हूँ

कभी तु छुपता है

बादलों जंगलों में

कभी मैं ढूंढता हूँ

कहीं गलियाँ झोपड़ियों में

कभी तु छुपता है

कजरारे नैनों में

कभी मैं खोजता

आसमान के तारों में

कभी तु छुपता है

सागर की गहराई में

कभी मैं तराशता

उच्छवास की आह में

कभी तु छुपता

कहियों के आँचल में

कभी मैं ढूंढता

अपलक न झुकते नैनों में

"Vibrant Pushti"

ये एक ऐसा एहसास है

ये एक ऐसा विश्वास है

ये एक ऐसा आत्मीय गूँज है

ये एक ऐसा विरह दर्द है

ये एक ऐसा इंतेज़ार है

ये एक ऐसा अनुभव है

ये एक ऐसी पूजा है

ये एक ऐसी साधना है

ये एक ऐसी आंतरिक तरंग है

ये एक ऐसा श्रृंगार है

ये एक ऐसा धड़कने चुभन है

ये ऐसी साँसों की धारा है

ये ऐसा आत्मीय सर्जन है

ये ऐसा मधुर प्राकट्य है

"Vibrant Pushti"

झुलन झूले होले होले प्रियतम

मन मोरा झुलाये तन मोरा झुलाये

झुलाये मोरे अंतरंग तरंगे

झुलन झूले होले होले प्रियतम

"Vibrant Pushti"
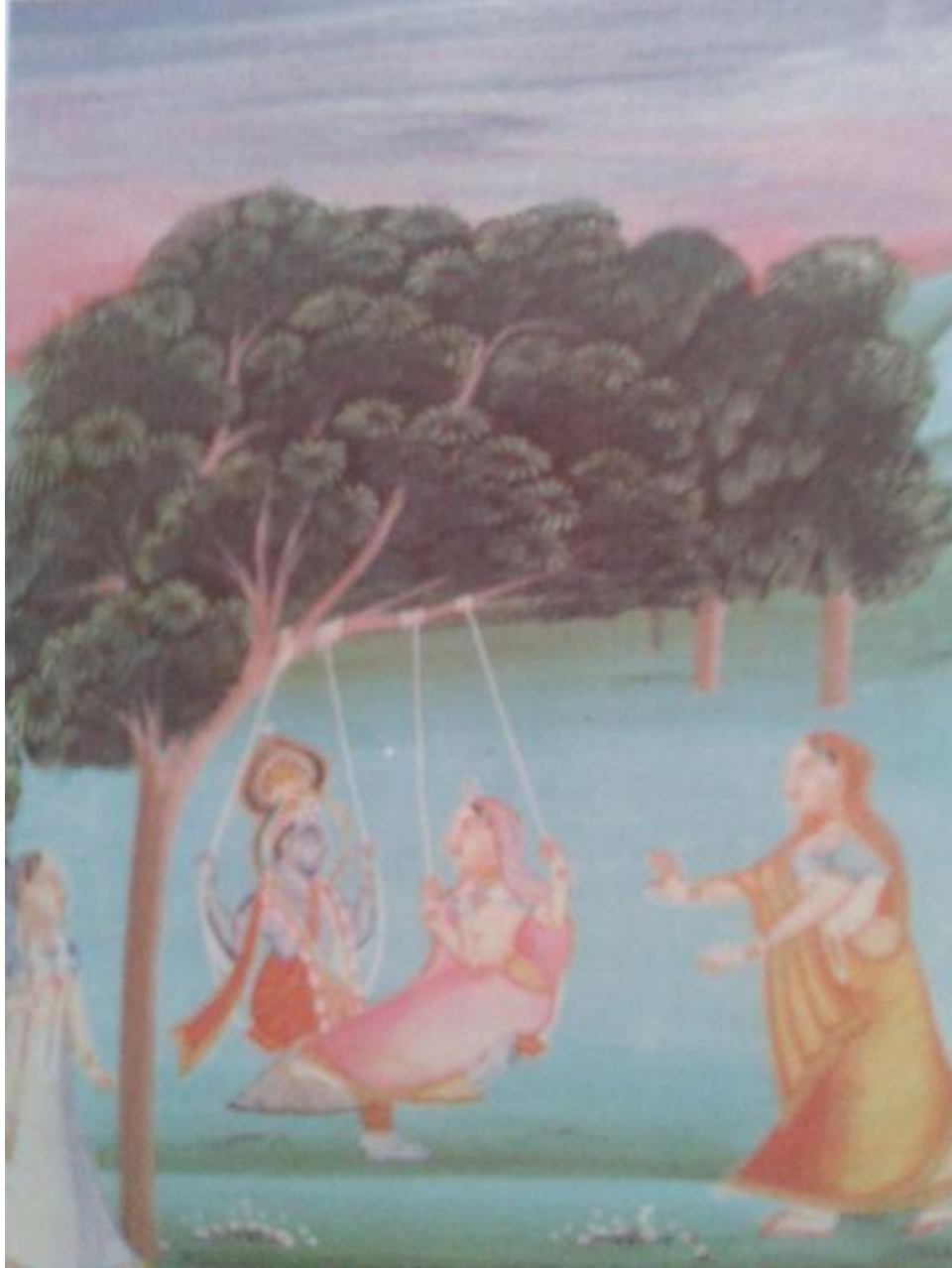
प्यासे की प्यास बढ़ाओ

विरह की रीत जतावो

तुम्हारे है तो तुमसे ही सीखेंगे

नही हमें आता आजमाना

क्यूँकी हम तेरे दीवाने है

"Vibrant Pushti"

ऑ ! मेरी प्रज्ञानता !

ऑ ! मेरी प्रगाढ़ता !

ऑ ! मेरी एकात्मता !

ऑ ! मेरी एकैयता !

ऑ ! मेरी ऐश्वरीयता !

तुम्हें पढ़ता हूँ

तो तेरी याद सताती है

तुम्हें याद करता हूँ

तो तेरा भाव पुकारता है

तुम्हें पुकारता हूँ

तो तु कहीं दूर चली जाती है

कैसी है यह रीत राधिके

प्रीत करें तो कैसी करें?

"Vibrant Pushti"

यमुना की खल खल धारा आसमान के टीम टीम करते तारे कोई संकेत दे रहे थे कि कुछ होने वाला है।

वायु मधुर बहे रहा था और पेड़ के पत्तो से आसपास की धरा को जगा कर कहे रहा था, कुछ होने वाला है तो आप सर्वे अपने आप को कुशल रखना कोई तुम्हारी पास आ रहा है।

इतने में पंखी का कलरव शोर करने लगा, उन्होंने कोई ऐसी तरंग सुनी जो तरंग में किसीका इंतेज़ार था।

धीरे धीरे वह तरंग छम छम के झंकार में परिवर्तन हो गयी, वही धरा और वही यमुना निकुंज के पास आ कर वह झंकार ठहर गयी।

आसपास नीरव शांति थी, यमुना का जल उछल उछल कर वो धरा की ओर लहराने लगे, शायद वह छम छम सूर जगाने वाले के चरण स्पर्श करलूँ।

वह पेड़ भी अपनी शाखाये झुका झुका कर अपने आप को इतना नीचा करने लगे कि शायद वो छम छम वाले के आंचल को छू लू।

दोनों की बात न बनी क्यूँकी छम छम के सूर जो जगाते थे वह एक ऐसी निकुंज के कोने में छुप गया कि न किसीकी नजर पड़े या न कोई आहट जाग जाये।

समय भी अपने आप को भूल गया जैसे वह वायु, वह यमुना की धारा, वह निकुंज की धरा, टीम टिमटिमाते सितारें और जो आया था वह भी।

पर जाग रहा था वह पेड़ जो निकुंज से जुड़ा था, उन्होंने अपनी नजर दूर दूर तक फिरायी पर कोई नजर न आया, वह सोचने लगा - इतनी रात को यह छम छम के सूर ऐसे नही बजते? कुछ तो होगा ही!

इसी सोचमें अपने आप को खो रहा था इतने में - कोई पुकार सुनी......

पेड़ चमक गया, और जो दिशा से आवाज आयी थी वो ही दिशा तरफ अपनी नजर सतेज करदी। इतने में फिरसे वह पुकार उठी - रा.......

पेड़ अपने पत्ते की हलचल से सही सुन न पाया पर इतना समझ पाया कि कोई आ रहा है और वह यह छम छम के जो सूर जगाये थे उन्हें ढूंढते ढूंढते ही यहाँ आयेगा।

यहाँ जो छम छम के सूर उठे थे उन्होंने यह पुकार सुनली और वह वोही पुकार की तरफ अपने कदम बढ़ाने लगे - यह बढ़ते और दौड़ते हर कदम ने छम छम के सूर को सरगम कर दिया और झंकार - छम छम छम छम की गूँज में परिवर्तन हो गया।

यमुना धारा भी समझ गयी, वायु भी समझ गया, पत्ते भी समझ गये, धरा भी समझ गयी, टिमटिमाते सितारें भी समझ गए और समय भी समझ गया कि यह कौन है?

यमुना का जल आकुल व्याकुल होने लगा, टिमटिमाते सितारें आसमान में जोर जोर से घूमने लगे, वायु अपने आपको झंझावात में परिवर्तन करने लगे और पत्ते अपने आपको शाखासे टूट टूट कर बिखरने लगे, धरा अपनी हर रज तीतर बितर करने लगी इतने में वह पुकार जो पेड़ ने अधुरप सी सुनी थी वह उनके बिलकुल निकट आ गयी और सबने सुनी - राधा!

ओहह! सर्वे थंभ गये, स्थिर हो गये! यमुना अपनी आकुल व्याकुलता छोड़ दी, टिमटिमाते सितारें रुक गए, वायु शांत हो गया, पत्ते नवचेतन होने लगे, धरा एक मेकमें घुल गयी और पेड़ सहसा हो गया।

सर्वत्र शांत हो गया, सब अपने धैर्य में छुप गये और इंतज़ार करने लगे कोई आत्मीय धन्यता और स्पर्शता का, इतने में वह पुकार की गूँज सुनायी "राधा" "राधा"

और वह छम्म छम्म के सूर एक दूजे के निकट आने के लिए अपनी हर आंतरिक और बाह्यी तीव्रता को उत्तेजित करते हुए दौड़ रहे थे।

छम्म छम्म के सूर रुक गए, पर वो पुकार का आंतर नाद आ रहा था, शायद छम्म छम्म ने सोचा होगा की देखु तो सही वो पुकार कितने रीति से द्रवित होगा, छम्म छम्म की अठखेलिया की मधुरप दोनों को कितनी गहराई से बांधते है?

"Vibrant Pushti"

हर बूँद में रीत भरी है

बूँद बूँद परिवर्तिता है

जिसको छुये बूँद का है

जिसको पीये बूँद का है

बूँद से पहचाना बूँद होना

बूँद से बूँद एक धारा होना

जैसे वसुंधरा का सागर

जैसे मन जीवन की माँ

क्षण क्षण संस्कृत

घड़ी घड़ी अमृत

बूँद बूँद प्रीतामृत

ओ! मेरे परम प्रिये परमात्मा!

तु हर रीत से है मेरा प्रियतम!

"Vibrant Pushti"

साँस भी कभी अपनी गहराइयों थामता है

अधर भी कभी अपनी चिपचिपायी मौन धरता है

नैन भी कभी अपनी पलके झुकी झुकी बरसाता है

धड़कन भी कभी अपनी मर्यादा संकोचता है

मन भी कभी अपनी उड़ान रुंधता है

तन भी कभी अपनी उतेजना दर्दता है

क्या यही ही प्रीत की विरहता है?

कुछ होता है।

"Vibrant Pushti"

" हे राधा "

अकेली मत जइयो रे
नही जइयो अकेली रे
परिक्रमा गोवर्धन के धीर
कदम कदम पर विरह रज छुये
घट घट में लीला तोहि रोके
पार नही पहुँचोगी बिन प्रीत डोले
बीच भँवर में पुकार नही छूटे
ले चल मुझे साथ चलते न टूटे
यही है हमारा सृजन
है यही हमारा मिलन
पत्ता पत्ता डाली डाली
स्थली स्थली क्यारी क्यारी
झंखे हमारा जतन
तरसे हमारा धरण
हे प्रिये! ओ प्रियतम!
आया तेरे ही संग
जुड़े अपना मन उमंग
हे श्यामा! मैं श्याम
एक हो जाये मधुर रंग
"Vibrant Pushti"
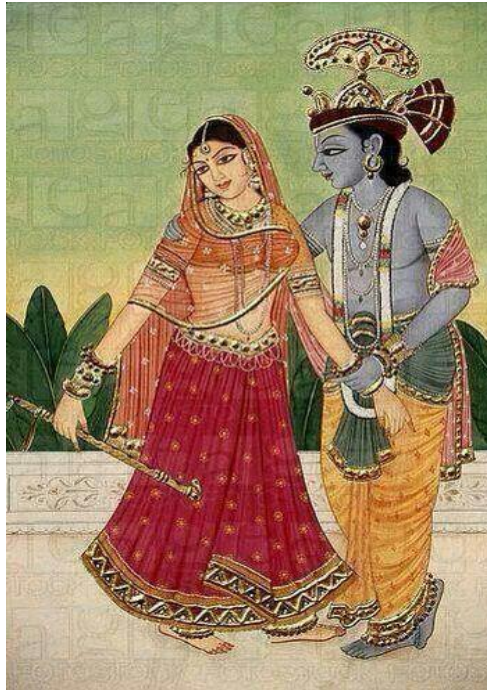
क्या है प्यार

कभी साँस थम जाती है

कभी स्वर रुक जाते है

कभी धड़कन जोर करती है

कभी दिल दबता जाता है

कभी मन खो जाता है

कभी तन बरसता है

नयनों से आवाज उठती है

कर्णो से आहटे थप थपाती है

ओहह!

"Vibrant Pushti"
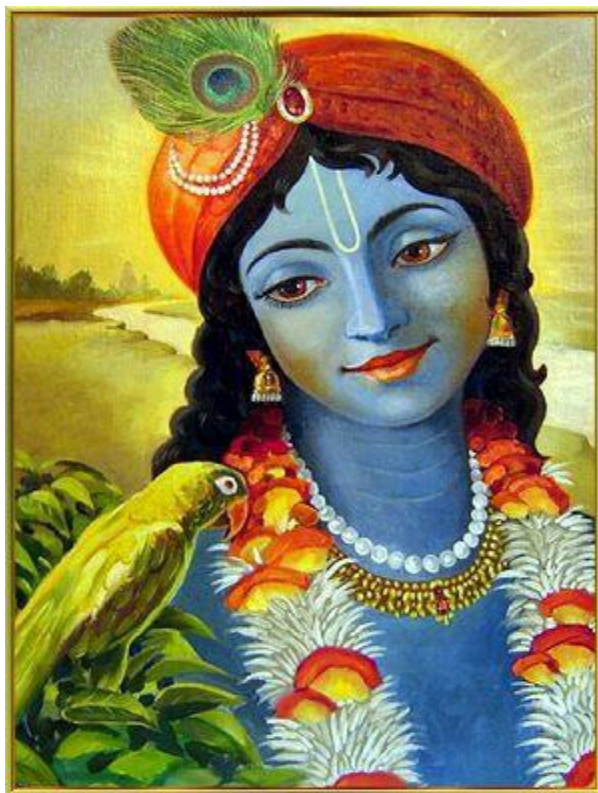
क्या क्या चुराओगी राधिका

मेरे नयन से तेरी किरणे

मेरे अधर से तेरे सूर

मेरे मन से तेरे विचार

मेरे तन से तेरा स्पर्श

मेरे दामन से तेरा लिपटना

मेरे गीत से तेरा तराना

मेरे साँसों से तेरा धड़कना

मेरे प्रेम से तेरा एकात्मता

मेरे विरह से तेरा झुरना

"Vibrant Pushti"
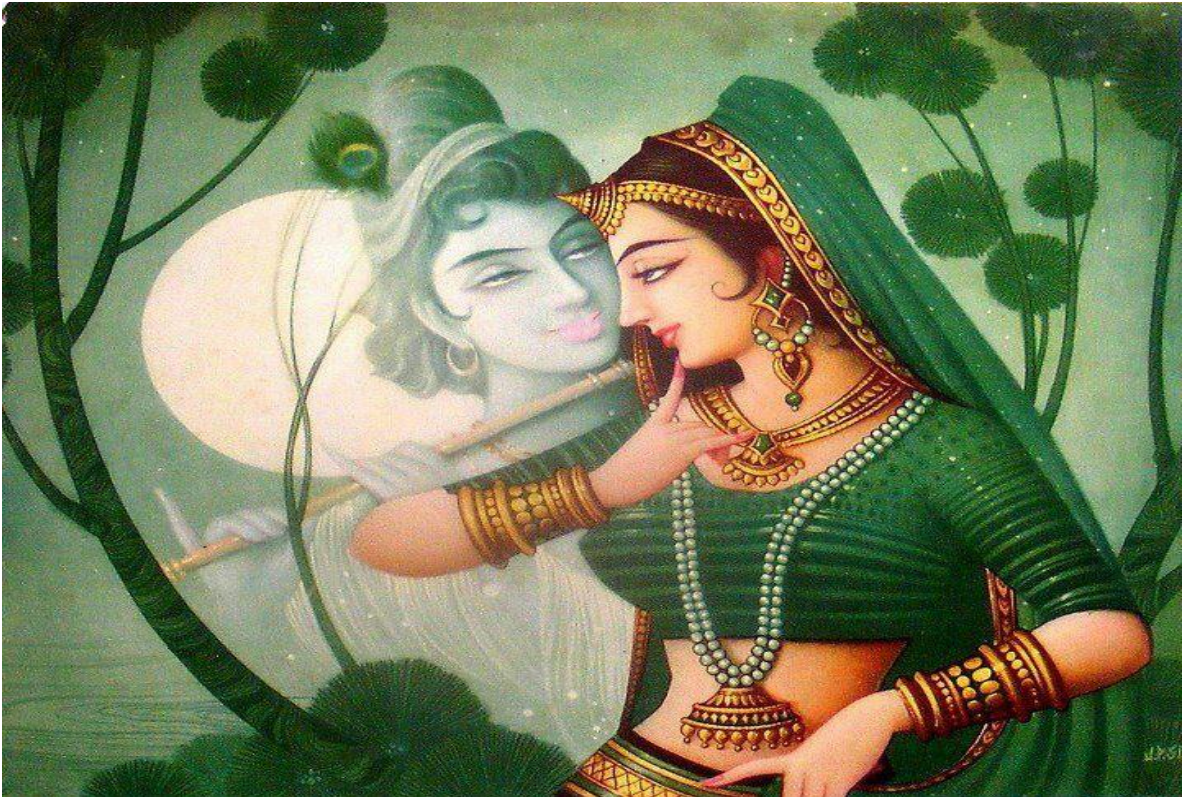
तुम्हारी याद और श्री प्रभु दर्शन मुझे तड़पाता है

तड़प यह साँस के पल पल की

तड़प यह नजर के इंतजार की

कैसी है यह असर सिसक सिसक की

क्या है रुख कोई प्रीत की

कुछ तो जगादे हे! कुछ तो जगादे

यह गर्म गर्म साँसों से

यह तरस तरस निगाहों से

उठता है कुछ धुआँओ सा

यह सिसक सिसक सूर विरह की

यह रुक रुक की याद मिलन की

तडपता है कुछ परवाना सा

कुछ तो जतादे हे! कुछ तो जतादे

"Vibrant Pushti"
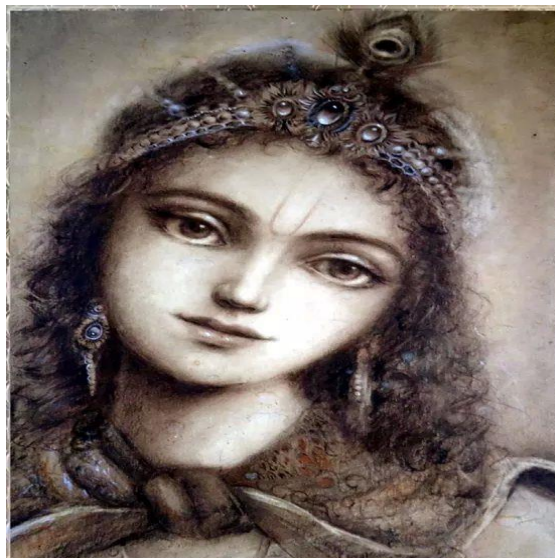
जन्म लिया है तो कृष्ण होना ही पड़ेगा

अंश है ही अंशी के तो कृष्ण होना ही पड़ेगा

प्रीत लूटानी है तो कृष्ण होना ही पड़ेगा

संसार में आये है तो कृष्ण लीला समझनी ही पड़ेगी

प्रकृति में बसे है तो कृष्ण के लिए परिवर्तन करना ही पड़ेगा

राधा के चरण छूने ही है तो कृष्ण होना ही पड़ेगा

जीवन रीत ही सर्वे की है तो कृष्ण अवतार पहचानना ही पड़ेगा

हे कृष्ण!

"Vibrant Pushti"

हे मेरी बंसरी की तान

हे मेरी मयूरपंख की पहचान

हे मेरी गौ धूलि की रज

राधा

ये कैसा ख्याल है

जो न मन को गंवारा नही

जो न नैन को गंवारा नही

जो न धड़कन को गंवारा नही

जो न साँस को गंवारा नही

जो न दिल को गंवारा नही

जो न प्रीत को गंवारा नही

है यह आत्मीय पुष्टि प्रीत का थोड़ा स्पर्श

जो तूट न जायें वह गंवारा है मुझे

यही तो है मेरे जन्मों जन्म की प्रीत

जो छूट न जाये वह गंवारा है मुझे

न करों जुल्म इतना कि न मैं रहूँ या न रहे मेरी प्रीत

नही तो न कोई किसीको राधा समझेगा न कोई किसीको कृष्ण

हे मेरा जीवन!

"Vibrant Pushti"

ये तो कहो

ये तो कहो

कौन हो तुम?

याद भी निराली

महक भी मतवाली

तन मन कैसे करें रखवाली

बिंदिया सजायी

कंगना खनकायी

पायल पुकारें प्रीत पिया साँवरी

हो हो ये तो कहो

ये तो कहो

कौन हो तुम?

कौन हो तुम?

नैन नैन मिलायी

अंग अंग लगायी

रोम रोम साँवरा रंग अपनायी

साँस साँस जगायी

अधर अधर पिलायी

आत्म श्याम पुष्टि प्रीत प्रकटायी

हो हो ये तो कहो

ये तो कहो

कौन हो तुम?

कौन हो तुम?

"Vibrant Pushti"

कहदो कहदो

ऑ कहदो कहदो

तु ही मेरी प्रेमेश्वरी हो !

प्रीत का हर दर्द मधुर है

प्रीत की हर अदा दिले जिगर है

जिसका हर खेल प्रीत लीला है

जिसकी हर रीत प्रीत कुरबानी है

"Vibrant Pushti"
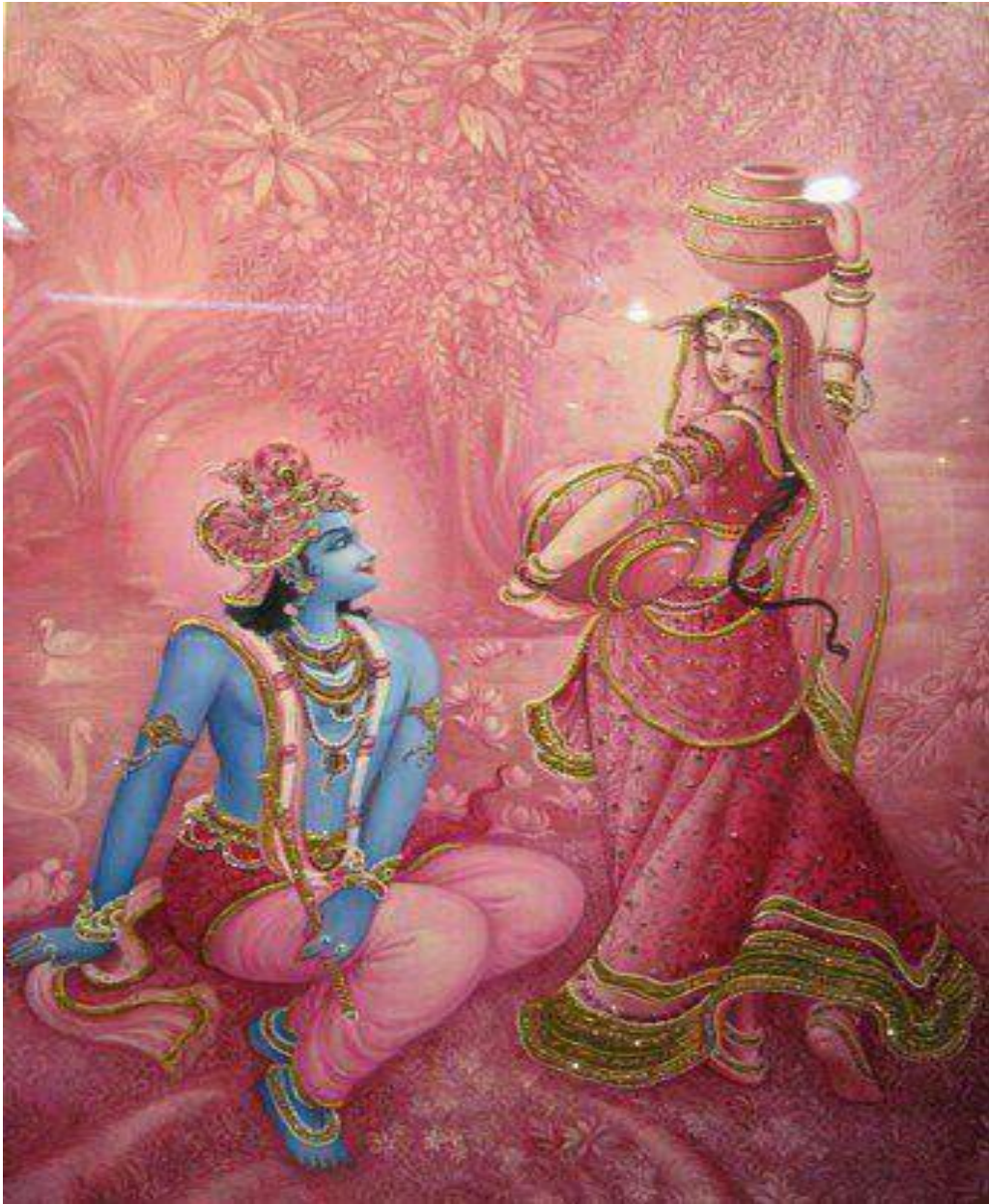
क्या है प्रीत?

क्या करना होता है?

न क्षण समझ सकते है,

न पल समझ सकते है,

न संबंध समझ सकते है,

न बंधन समझ सकते है,

क्या होना होता है?

न जीव हो सकते है,

न मानव हो सकते है,

न आत्म हो सकते है,

न ब्रह्म हो सकते है,

ओहह! तो क्या प्रकटाना है?

"Vibrant Pushti"
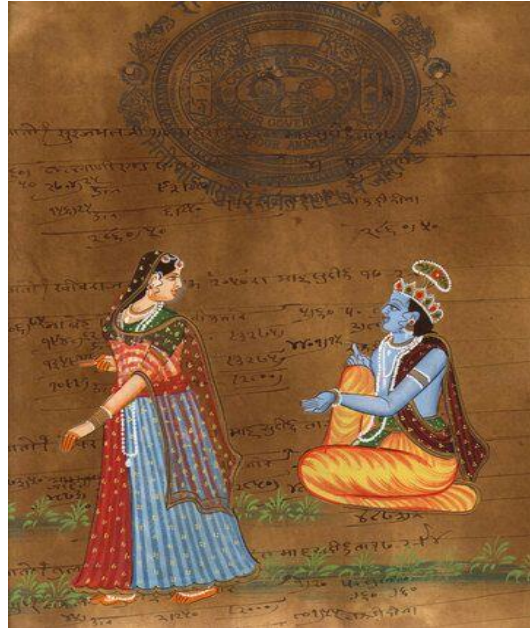
तुझे चाहा

तुझे पूंजा

तुझे कुरबाया मैंने

बस यही खता है मेरी

और खता क्या है?

मुझे मेरा प्यार मिला

हर एक बूंद से मुझे

पुष्टि पुष्टि शीतलता पायी

"Vibrant Pushti"

न नजर फरकती, न नजर उठती, न नजर झुकती,

स्थिर हो गए नयन बांवरे

मुग्ध हो गए मुखडा सांवरे

साँस सरल हो गई

होंठ कश से बिड गये

कर्ण न कुछ सुनने लगे

धड़कन तेज धड़कने लगी

ऐसी लागी लगन

कृष्ण हो गये गोवर्धन

नैत्र पुकारने लगे

गात्र रुकने लगे

मन गाने लगा

तन मचलने लगा

आँचल लहराने लगा

दिल बैठने लगा

न वह खुद के रहे

न उन्हें किसीका रहने दिया

लूट गया वह हर तरह से

मिट गया वह हर सजा से

"Vibrant Pushti"

अरे कृष्ण! क्या ढूंढते हो?

मैं कब से देख रहा हूँ, तुम इधर उधर - कभी ऊपर कभी नीचे, कभी बायें कभी दायें, तो कभी खड़े हो कर कभी बैठ कर, कभी एक नजर से कभी नैनों में बूंद भर कर, कभी लपाते कभी छुपाते, कभी गुनगुनाते कभी मौन धारण कर, क्या क्या करके क्या ढूंढते हो?

कही घडीओ से मैं भी टटोलता रहा सोचता रहा, आश्चर्य से उत्सुक होता हुआ घूमता रहा कि क्या ऐसा नही मिल रहा है कृष्ण को, जो कब का खोजता रहा है।

अपने सखा की आवाज सुन कर कृष्ण उदास हो गये, चहरे से नूर उड़ गया और गमगीन सी छा गई।

क्या कहे, क्या बोले!

कृष्ण क्या कर रहे है?

सखा ने फिर से पूछा - कृष्ण! क्या है?

कृष्ण ने न अपना मौन तोड़ा और न कोई प्रतिक्रिया व्यक्त की, न कोई भाव जताया न कोई संकेत दर्शाया।

अपनी धून में ही सखा की ओर एक ही नजर से उन्हें देख ने लगे।

सखा अचंबित हो कर फिर से कहा - कृष्ण! क्या हुआ? क्यूँ मौन है? क्यूँ ऐसा कर रहा है? कुछ हुआ है?

सखा ने प्रश्नों की झडी बरसादी

पर

न कोई प्रत्युत्तर न कोई प्रतिसाद, केवल खुद में खोया था एक आंतर प्रतिवेद पुकार घूट घूट कर।

सखा से रहा न गया और इधर उधर, उपर नीचे नजर घुमा कर बोल उठा - कृष्ण! यहाँ ऐसा तो कुछ है ही नही तो फिर तुम किसे ढूंढ रहे हो, क्या ढूंढ रहे हो?

सखा बैचैन हो कर सोचते सोचते - यह तो कान्हा है और उनकी हर रीत निराली है - सोचते सोचते चल पड़ा।

इधर कान्हा फिर अपनी धून में खो गया।

ऐसा खोया की वह अपनी बंसरी की मोतियन फूमते से डाली को सजाने लगा, अपने सिर के मयूर पंख पत्ते में पिरोने लगा, अपनी व्यजंती माला को पौधों पर बांधने लगा, टगुर टगुर देख कर वो खुद भी कभी हँसने लगता तो कभी आँसू बहाने लगता।

इतने में उन्हें याद आया अपना खेस - तुरंत उन्होंने पौधें के थड को लिप्टाके अपने दोनों हस्त से पहनाने लगा, दौड़ के दूर जा कर निहारने लगा - कैसी है रे मेरी....... और वह गिर पड़ा।

गिरते ही वो पौधें से एक हरा पत्ता उड़ कर कान्हा के उपर आ पड़ा, पत्ते की लगी से कान्हा को मधुर स्पर्श अनुभूत होने लगा। कान्हा ने वह पत्ता अपनी बांसुरी वादक उँगली से पकड़ा और जैसे पत्ते को अपने नयनों में बसाने लगा इतने में ही वह पत्ते में एक आकृति नजर आयी और कान्हा झबक गया, ओहह! पत्ते के मध्य में गुलाबी रंग की कोई छींट दर्शने लगी और कान्हा व्याकुल हो गया।

"Vibrant Pushti"

राधा तुझे सदा ढूँढता रहूँ

यही तो पीना है - प्रेम रस

जो पीते पीते हर रोम श्याम हो जाये।

मैं श्यामा तु श्यामलिया हो जाये।

मैं राधा तु कृष्ण हो जाये।

मैं गोपि तु गोपाल हो जाये।

मैं मोहनिया तु मोहन हो जाये।

मैं साँवरी तु साँवरिया हो जाये।

"Vibrant Pushti"

मुझे श्री प्रभु प्रेम पीना है

कैसे?

जैसे मैं उनकी हो जाऊं

जैसे मैं उनमें खो जाऊं

जैसे मैं उनसे जुड़ जाऊं

जैसे मैं उनमें डूब जाऊं

जैसे मैं उनसे लड़ जाऊं

जैसे मैं उनमें विरह जाऊं

जैसे मैं उनसे लूट जाऊं

जैसे मैं उनमें मिट जाऊं

जैसे मैं उनसे लिपटा जाऊं

जैसे मैं उनमें पगला जाऊं

जैसे मैं उनपे मरता जाऊं

जैसे मैं उनमें खिंचता जाऊं

जैसे मैं उनसे संवरता जाऊं

जैसे मैं उनमें भटकता जाऊं

जैसे मैं उनको गाता जाऊं

जैसे मैं उनमें रंगाता जाऊं

जैसे मैं उनसे तडपता जाऊं

जैसे मैं उनमें झूमता जाऊं

"Vibrant Pushti"

"कन्हैया" कन् + हैया = कन्हैया

कन् अर्थात कहाँ नहीं।

कन् अर्थात कण कण में।

कन् अर्थात कोई भी अवकाश।

कन् अर्थात कोई भी साँस।

हैया - प्रीत का मूल स्थान।

हैया - विश्वास का मूल स्थान।

हैया - धारणा का मूल स्थान।

हैया - पवित्र गति का मूल स्थान।

हैया - पुरुषार्थ का मूल स्थान।

हैया - प्रिये का मूल स्थान।

कन्हैया! कितना माधुर्य है - कहने में

कन्हैया! कितना वात्सल्य है - तन मन में

कन्हैया! कितनी तीव्रता है - स्मरण में

कन्हैया! कितनी शुद्ध गूँज है - आंतरिक पुकार में

कन्हैया! कितनी अनोखी स्वर सरगम है - सुनने में

कन्हैया! कितना अलौकिक शब्द है - लिखने में

कन्हैया! कितना धडकता भरा आनंद है - सीने में

कन्हैया! कितना अद्वैत है - परम - पर एकात्म में

कन्हैया! कितनी प्रीत उत्सती धारा है - आत्म में

कन्हैया! कितनी विरहता है - साँसों की आह में

कन्हैया! कितनी आतुरता है - तन में

कन्हैया! कितनी व्याकुलता है - विरहाग्नि में

कन्हैया! कितनी एकात्मता है - आत्म परमात्मा मिलन में

कन्हैया! कितना समर्पण है - तन मन धन में

कन्हैया! कितना कितना ओह्ह! कितना .... है - तुमसे दूर रहने में

कन्हैया! तु कौन है रे! तु क्या है रे!

ऐसो है मेरो प्रियतम!

"Vibrant Pushti"

"कृष्ण" "कृष्" व्याकरण अर्थ है आकर्षण, सर्व में, सर्वत्र व्याप्त। हमारी धरती खेती प्रधान धरती है और हर रज में कृष् उगता ही है, यह हर रज में। "ण" अस्तित्व है, अस्तित्व होना, सर्वत्र दृश्य और अदृश्य से होना - समाना - बसना - व्यापक होना - ऐक्य होना - आंनद होना - परिवर्तन करना अर्थात नूतन तनु करना वह परम विशुद्ध तत्व को "कृष्ण" कहते है।

"कृष्ण" मेरे कैसे प्रियतम है और प्रेमी है?

जो मुझे प्रीत करें!

जो मुझे सदा जगाये - तुम कौन हो?

जो मुझे सदा योग्य करने खुद को कहीं कहीं रीति से - परिवर्तन से मुझे सिखाये, समझाये, मेरा साथ निभाये।

जो मुझे अपना सर्वत्र लूटा कर मुझसे शुद्ध और पवित्र क्रिया करवाये।

जो मुझमें एकरुप हो कर खुद को सामान्य करके मुझे असामान्य - असाधारण रचाये।

मेरे हर ज्ञान - भाव और परिस्तिथि में मुझे सर्वोत्तम पाठ पढाये।

मुझे मेरी खुद की पहचान कराने ब्रह्मांड, जगत, सृष्टि, प्रकृति और संसार को हर तरह का पोषण - पुष्टि कराये।

मुझे हर कक्षा में, हर समय में मेरी रक्षा करें।

मुझमें प्रीत की हर रीत से मुझे खुद में समाये और वह खुद मुझमें समाये।

ओहह मेरे प्रिये!

तुम ही मेरे परम प्रियतम हो! जो मुझे प्यार प्यार और प्यार करते हो।

"Vibrant Pushti"

अपने प्रियतम प्रेमी "श्री कृष्ण" को हम कैसे भाव से पुकारेंगे?

जैसे

नरसिंह महेता ने - शामलिया अर्थात - श्यामलिया

मीराबाई ने - गिरिधर

कोई माधव

कोई मोहन

कोई श्याम

कोई गोविंद

कोई गोपाल

कोई गोवर्धन

कोई वासुदेव

कोई वार्ष्णेय

कोई दामोदर

कोई केशव

कोई नंदलाल

कोई राधे

कोई कृष्ण

कोई कन्हैया

कोई कान्हा

कोई लल्ला

कोई बाल कृष्ण

कोई द्वारकाधीश

कोई विठ्ठल

कोई नवनीत

कोई नरसिंह

कोई गोकुलेश

कोई मुकुंद

कोई पुरुषोत्तम

कोई मधुसूदन

कोई मुरारी

कोई श्रीनाथजी

कोई योगेश्वर

कोई जगदीश

कोई नटवर

कोई जगन्नाथ

कोई मदन मोहन

कोई वल्लभ

और कहीं है - क्यूँ ?

"Vibrant Pushti"

करता हूँ बंध पलकें

तेरी रुस्वाई हमें पुकारती है

हे जग जीव!

तेरे नयनों से सौंदर्य सजाऊँ

करता हूँ अधर चिपके

तेरी मुस्कान हमें कहलाये

हे जीवन जीव!

तेरे खंजन से मुखडा नचाऊ

धरता हूँ मौन शरमा के

तेरी सूरत हमें सुनाएँ

हे अंश जीव!

तेरी शांता से तुझें समाऊं

हे गोपी!

तु ही मैं हूँ

मैं ही तुम हूँ

यही है सृष्टि का जीवंत

यही है प्रकृति का बंधन

"Vibrant Pushti"

हे इश्क! क्या है तु? क्यूँ है तु?

तेरे एक साँस से दिल पंकज हो जाता है

तेरे एक अश्क से धडकन पूजा हो जाती है

तेरे एक स्पर्श से आत्म ज्योत हो जाती है

तेरी एक नजर से नयन शरण हो जाता है

तेरी एक सोच से मन पागल हो जाता है

तेरी एक गूँज से रोम स्पंदन हो जाता है

सच मैं ऐसा साँवला हो गया हूँ

हर तरह से हर द्वार भटक रहा हूँ

"Vibrant Pushti"
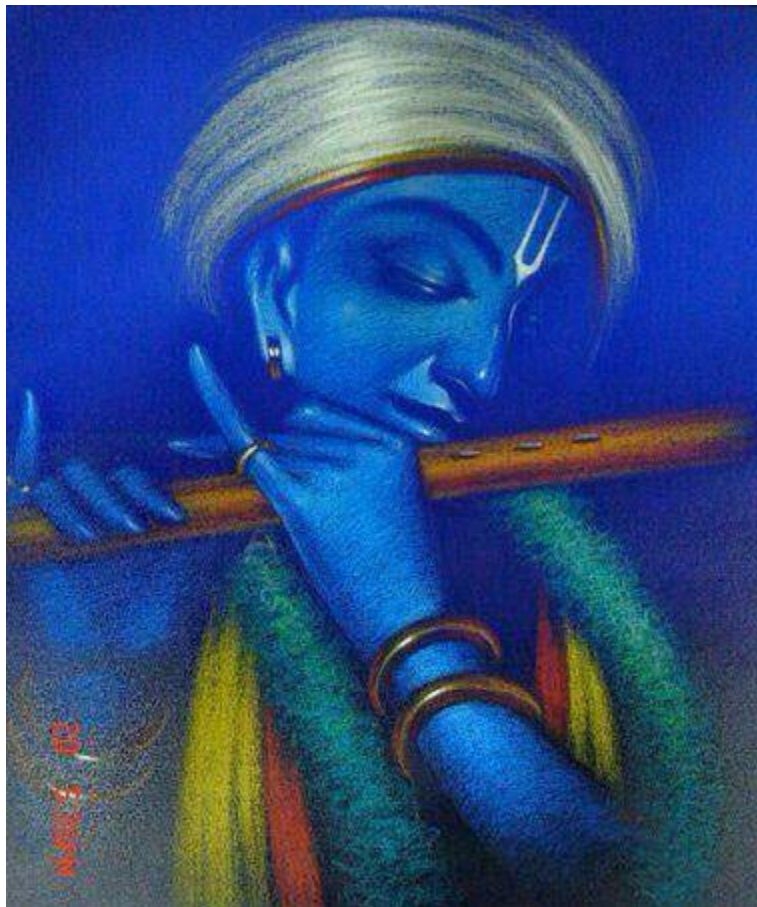
पंखी बीन कैसे जीऊँ मैं

वह गाये गीत पिया मिलन में

यह है मुझे सिख बीन बादल गगन में

वनस्पति बीन कैसे जीऊँ मैं

वह बिछाये आँचल पिया मिलन में

यह है मुझे सिख वैरान रेगिस्तान में

पशु बीन कैसे जीऊँ मैं

वह निभाये साथ पिया मिलन में

यह है मुझे सीख पथराळ जमीन में

पिया मिलन में एक एक स्पंदन

हर जगाये हर संवारे पिया मिलन

यही मुझे प्रीत सिखाई आत्म जीवन में

"Vibrant Pushti"

कुछ तो है यह मन में

कुछ तो है यह तन में

कुछ तो है यह जीवन में

कुछ तो है यह वन में

कुछ तो है यह आँगन में

कुछ तो है यह सावन में

कुछ तो है यह गगन में

कुछ तो है यह चमन में

कुछ तो है यह कंगन में

कुछ तो है यह चरण में

कुछ तो है यह सजन में

कुछ तो है यह लगन में

कुछ तो है ....

प्रीत शरण में

"Vibrant Pushti"

हे मोहब्बत की कसम

मोहब्बत की कसम

हे प्यार की कसम

प्यार की कसम

हे उल्फत की कसम

उल्फत की कसम

हे इश्क की कसम

इश्क की कसम

हे प्रीत की कसम

प्रीत की कसम

हे तेरी ही कसम

मेरी ही कसम

"Vibrant Pushti"

छूप गया है प्यार

छूप गया है प्यार

नजरों से दूर है प्यार

नजरों से दूर है प्यार

ढूँढे कहाँ है प्यार

ढूँढे कहाँ है प्यार

छूप गया है प्यार.......

खुला आसमां बतादे तु

गहरा सागर उठादे तु

नहीं सितारों में झगमगाया तु

नहीं मौजों में लहराया तु

छूप गया है प्यार

छूप गया है प्यार

नजरों से दूर है प्यार

नजरों से दूर है प्यार

ढूँढे कहाँ है प्यार

ढूँढे कहाँ है प्यार

छूप गया है प्यार......

उडती रज सुनादे तु

बरसती बूँदे झरझरादे तु

नहीं हवा में उडाया तु

नही बरसात में रिमझिमाया तु

छूप गया है प्यार

छूप गया है प्यार

नजरों से दूर है प्यार

नजरों से दूर है प्यार

ढूँढे कहाँ है प्यार

ढूँढे कहाँ है प्यार

छूप गया है प्यार

छूप गया है प्यार

"Vibrant Pushti"

वात्सल्य से क्या क्या कर दिया कान्हा को

वात्सल्य से क्या क्या बना दिया कान्हा को

वात्सल्य से क्या क्या रच दिया कान्हा को

वात्सल्य से क्या क्या सज दिया कान्हा को

वात्सल्य से क्या क्या लूटा दिया कान्हा को

वात्सल्य से क्या क्या पिला दिया कान्हा को

वात्सल्य से क्या क्या खिला दिया कान्हा को

वात्सल्य से क्या क्या बसा दिया कान्हा में

वात्सल्य से क्या क्या भर दिया कान्हा में

वात्सल्य से क्या क्या जगा दिया कान्हा में

वात्सल्य से क्या क्या रख दिया कान्हा में

वात्सल्य से क्या क्या महका दिया कान्हा में

वात्सल्य से क्या क्या छूपा दिया कान्हा में

कैसी है रे मैया?

कैसा है रे कनैया?

कैसे कैसे कौन कौन हो गये बावरीयाँ

सच! ऐसे हो गया मेरा साँवरिया

"Vibrant Pushti"

तु गाये जा

हे तु गाये जा

गाये जा

गाये जा

यही है पल

यही है मन

यही है तन

यही है धून

यही है गूँजन

यही है जीवन

यही है धडकन

यही है सुमिरन

यही है सर्जन

यही है चुंबन

यही है बंधन

यही है चुभन

यही है मिलन

नहीं तो

नहीं तु रहेगी

न मैं रहूँगा

नहीं प्रीत रहेगी

न प्रिय रहेगा

न प्रियतम रहेगी

न राधा रहेगी

न कृष्ण रहेगा

न यमुना रहेगी

न गिरिराज रहेगा

न व्रज रज रहेगी

न व्रज रहेगा

न बरसाना रहेगी

न वृंदावन रहेगा

क्यूँ?

"Vibrant Pushti"

करे एहतराम प्रीत की

जो सदा निकट रहे

आज खेलों मेरी नयनों से

आज खींचो मेरे तन को

अपने तिरछे नजरों की चितवन से

मैं तुम्हारी हूँ

तुम मेरे रोम रोम में अपनी प्रीत भर दो

दिया है दर्शन मुझे

तुम अपने रंग रंग में रंगदो

हे कान्हा!

तुम तो श्याम हो

ओ प्यारे

तुम तो श्यामा हो

ओ न्यारी

मुझे तुमसा रंग न कोई भाये

ओ प्यारे

तुम तो श्याम हो

तेरे मुखडे पे मैं वारी वारी कान्हा

तेरे प्रीत रीत से मैं कछु नहीं श्यामा

तेर चितवन पे नयन हारी हारी गोपाला

तेरे अपलक नयन से प्रीत संवारी राधा

हटो जाओ

ओ मेरे कान्हा! मुझे और न लूटो

तुम तो श्याम हो

ओ प्यारे

तुम तो साँवली हो

ओ न्यारी

इतना जतादो मुझे कब तक यूँ ही रहना

जीतना वादा किया है प्रीत ने तब तक हमें मिलना

कब तक खडी रहूँ यूँ ही यमुना के तट पर

(मेरी पास यह प्रश्न का उत्तर नहीं है)

हटो जाओ

ओ मेरे कान्हा! मुझसे नटखट करने

तुम तो श्याम हो

ओ प्यारे

तुम तो प्रीत हो

ओ न्यारी

इतना कह दो मुझे तुम मेरे क्या हो

कैसे कह दूँ मेरी प्रीत चोर राधा को

हटो जाओ

ओ मेरे साँवरिया! मुझे और न सताओ

तुम तो श्याम हो

ओ प्यारे

तुम तो बावरी हो

ओ न्यारी

तुम तो श्याम हो

ओ प्यारे

तुम तो श्यामा हो

ओ न्यारी

मुझे तुमसा रंग न कोई भाये

ओ प्यारे

मुझे तुमसा संग न कोई भाये

ओ न्यारी

तुम तो श्याम हो

तुम तो श्यामा हो

तेरे मुखडे पे मैं वारी वारी कान्हा

तेरे प्रीत रीत से मैं कछु नहीं श्यामा

तेर चितवन पे नयन हारी हारी गोपाला

तेरे अपलक नयन से प्रीत संवारी राधा

हटो जाओ

ओ मेरे कान्हा! मुझे और न लूटो

तुम तो श्याम हो

ओ प्यारे

तुम तो साँवली हो

ओ न्यारी

इतना जतादो मुझे कब तक यूँ ही रहना

जीतना वादा किया है प्रीत ने तब तक हमें मिलना

कब तक खडी रहूँ यूँ ही यमुना के तट पर

(मेरी पास यह प्रश्न का उत्तर नहीं है)

हटो जाओ

ओ मेरे कान्हा! मुझसे नटखट करना

तुम तो श्याम हो

ओ प्यारे

तुम तो प्रीत हो

ओ न्यारी

इतना कह दो मुझे तुम मेरे क्या हो

कैसे कह दूँ मेरी प्रीत चोर राधा को

घट घट तरसना ऐसे पल पल बरसना तुझसे

साँसों की साँस लडी है हर जनम जनम से

हटो जाओ

ओ मेरे साँवरिया! मुझे और न सताओ

तुम तो श्याम हो

ओ प्यारे

तुम तो बावरी हो

ओ न्यारी

"Vibrant Pushti"

ले चल ले चल

ले चल हे प्रियतम साथी

ले चल प्रीत जहाँ तक

न कोई रीत रहे स्वार्थ की

न कोई कृति रहे अविश्वास की

चलती रहे राहे प्यार की

ले चल ले चल

ले चल हे राधा साँवरि

ले चल वृंदावन व्रज निधि

न कान्हा रहूँ न रहे राधा

न गोपि रहे न रहूँ गोपाल

व्रज निकुंज रज हो प्यार

ले चल ले चल

"Vibrant Pushti"

फूल उगाया

झरना फूटाया

बूँद बरसाया

सप्तरंग झगमगाया

साँस थमाया

होठ थरथराया

नैन अपलकाया

दिल थडकाया

क्यूँ

प्रीतरीत में खुद को लुटाया

"Vibrant Pushti"

खुद को छूपाने पलक रचाई

खुद को बरसने आँसू बहाये

खुद को पीने अधर रस जगाये

खुद को गूँजने धडकन बजाई

खुद को बसाने दिल प्रकटाया

खुद को तरसने प्रीत घडाई

खुद को महकने साँस लहराई

ऐसी लीला है मेरे प्रियतम!

जो पल पल जीवन जन्माये

हे राधा!

हे श्यामा!

हे कान्हा!

हे साँवरा!

"Vibrant Pushti"

हे प्रीत! तुझे पूजा है

यही मेरा सेवा है

यही मेरी शरणागत है

यही मेरा प्रणआम है

यही मेरा अस्तित्व है

यही केवल मेरा आचरण है

यही केवल हमारा श्वास है

यही केवल हमारी ज्योति है

"Vibrant Pushti"

प्रीत की रीत अष्ट है

और जो अष्ट रीत में माहिर है

उन्हें अष्टि कहते है।

अष्टि केवल कान्हा है

जो हर प्रीत लीला में निपुण है।

अष्ट रीत समझनी है.....

ओहहह!

पहले यह कहो

सेवा में तुम्हें कुछ होता है?

एक सच कहे- इसमें न अहंता और ममता नहीं है पर विशुद्धता है।

तुमसे रचायी - तुमसे जतायी हूई सेवा और दर्शन प्रीत से सभर है, न्योछावर है, समर्पित है, शरणागत है।

"Vibrant Pushti"

ऐसी कैसी खता करु की मैं तेरी हो जाऊँ

हर खता से मैं जी रही हूँ

मुझे खता करना ही आता है।

यह नैनन ने देखा

यह कर्णों ने सुना

यह होठों ने पुकारा

यह हाथों ने पूजा

यह पैरों ने दौडा

यह मन ने मचला

यह तन ने कुचला

यह धडकन ने धडका

यह धन ने लूटा

यह जीवन ने तडपा

अब तुही जता कैसी खता करु क्या?

ओओओओओ! मेरे कान्हा!

"Vibrant Pushti"

यह दिल है मेरा ऐसा पंछी

जो उडे उल्फत के आसमाँ पर

बैठे प्यार के फूलों पर

संवारे प्रेम के बूँदों से

शृंगारे वात्सल्य के आँचल से

सृजन करे प्रीत की उर्जा से

सदा जुडता रहे आत्म आत्म से

"Vibrant Pushti"

आसमान से निहारते है तारें तुम्हें

आसमान से झांकता है चंद्रमा तुम्हें

टिमटिमा के इशारे से पास बुलाये

चाँदनी के पथ से राह दिखाये

सच

कैसी हो हे नार नवेली!

धरती पर रहते भी आसमाँ पर बुलायें

कैसी है यह रीत तेरी और उनकी

जो पल पल तुं उपर खिंचती जायें

मैं बुलाऊँ तो नजर न आयें

मैं पुकारुँ तो सुन न पायें

मैं इशारुँ तो समझ न जायें

कैसी हो हे नार नवेली!

जो पल पल दौडी जायें

तारें बसायें सारे जुल्फों में

चाँद बसाया सारे मुखडें पे

फूल खिलायें अधर मुस्कान से

रंग बिखरायें सारे आँचल से

रात भर रंगरेलियां खेली

अंग अंग पर रस बरसाई

मधुर मधुर रास रचाई

तु तु न रही वह वह न रहा

छोड अकेला मुझे

कहीं क्या क्या लूट आई

कैसी हो हे नार नवेली!

जो पल पल बिछडी जायें

अब न कहना हे बेवफाई!

छोडूंगाँ मैं विरह बंसरी नाद सुनाई

न दौडी आना तोडने मेरी तनहाई

प्रीत है मेरी परम पवित्र सच्चाई

केवल केवल आत्म आत्म बसाई

जो केवल राधा ही ध्याहाई

इसलिए ही हूँ मैं कृष्ण कन्हाई।

"Vibrant Pushti"

सर पर मोर पीछ सजा दे

प्रिया मेरी घुंघराले जुल्फों देख लें

जुल्फों में कहीं फूलों सजा दे

प्रिया मेरे महकते जुल्फों छू लें

घुमड घुमड घट जुल्फों बांध दे

प्रिया मेरे लहराते जुल्फों पकड लें

इधर उधर बिखराते जुल्फों संवार दे

प्रिया मेरी फरफिराती लट नैन बसा लें

तो

यह प्रीत बंधाणी तेरे कजरारे नैनों से

यह प्रीत संधाणी तेरी तिरछी नजर से

यह प्रीत लगाणी तेरे पलछिन पलक से

राधा! यही है प्रीत की दोर

जो मेरे घुंघराले जुल्फों से है

"Vibrant Pushti"

क्या नाम पाया है "कृष्ण"

नयनों में जागते ही तुझे देखने को तन मन और आत्म तडपता है। "कृष्ण"

क्या नाम पाया है "कृष्ण"

होठों से स्वर गूँजते है यह नाम का तो नयन, मन, तन और आत्म एक हो कर आंतर भाव जगाते है। "कृष्ण"

क्या नाम पाया है "कृष्ण"

अंगुलियों से लिखते है यह नाम तो नयन, तन, मन और आत्म व्याप हो जाते है और आसपास सिर्फ वोही द्रष्टि पात होते है। "कृष्ण"

क्या नाम पाया है "कृष्ण"

कर्ण से बसें यह तन, मन और आत्म में तो प्रीत का स्पंदन उठते है रोम रोम में। "कृष्ण"

क्या नाम पाया है "कृष्ण"

न सुनें, न निहालें, न पुकारें पर केवल स्मरण ही जागे "कृष्ण" तो सारा तन मन और आत्म में बस जाता है। "कृष्ण"

क्या नाम पाया है "कृष्ण"

साँस छूये, बूँद छूये, रज छूये, किरण छूये "कृष्ण" "कृष्ण" ही प्रकटे हर हर स्पर्श से। "कृष्ण"

क्या नाम पाया है "कृष्ण"

जन्म धारण किया है - "कृष्ण"

जीवन अपनाया है - "कृष्ण"

तन मन आत्म संवारा है - "कृष्ण"

आनंद धन पाया है - "कृष्ण"

आत्म से परमात्मा जोडा है - "कृष्ण"

क्या नाम पाया है "कृष्ण"

केवल और केवल जो जगाया है हर रीत से

केवल और केवल जो जगाया है हर संस्कृति से

केवल और केवल जो जगाया है हर सृष्टि से

केवल और केवल जो जगाया है हर कर्म से

तो है "प्रीत"

यह प्रीत है केवल निहालने "कृष्ण"

यह प्रीत है केवल पुकारने "कृष्ण"

यह प्रीत है केवल सुनने "कृष्ण"

यह प्रीत है केवल बसाने "कृष्ण"

यह प्रीत है केवल लूटाने "कृष्ण"

यह प्रीत है केवल लूटने "कृष्ण"

ओहहह "कृष्ण"

"Vibrant Pushti"

सारी उमरियाँ बितायी "कान्हा" तेरे प्यार में

सारी साँसें लूटायी "कान्हा" तेरे आनंद में

सारी नजरें बिछायी "कान्हा" तेरे दिदार में

सारी सोच घुमायी "कान्हा" तेरे चारित्र्य में

सारी धडकन पुकारी "कान्हा" तेरे स्मरण में

सारी बुद्धि संवारि "कान्हा" तेरे कर्मलीला में

सारी काया घिसाई "कान्हा" तेरे स्पर्श में

सारी प्रीत पिलायी "कान्हा" तेरे विरह में

हे कान्हा!

"Vibrant Pushti"

हे प्रियतम!
क्या मन पाया है!
सोचते है, सोचते ही रहें, सोचते ही रहते है।
क्या तन पाया है!
करते है, करते ही रहें, करते ही रहते है।
क्या नैन पाया है!
निहारते है, निहारते ही रहें, निहारते ही रहते है।
क्या कर्ण पाया है!
सुनते है, सुनते ही रहें, सुनते ही रहते है।
क्या होठ पाया है!
पुचकारते है, पुचकारते ही रहें, पुचकारते ही रहते है।
क्या मुखडा पाया है!
संवारते है, संवारते ही रहें, संवारते ही रहते है।
क्या दिल पाया है!
पिघलते है, पिघलते ही रहें, पिघलते ही रहते है।
क्या साँस पायी है!
छूते है, छूते ही रहें, छूते ही रहती है।
क्या रंग पाया है!
बिखरते है, बिखरते ही रहें, बिखरते ही रहते है।
क्या प्रीत पायी है!
झुरते है, झुरते ही रहें, झुरते ही रहते है।
हाँ! प्रिये!
"Vibrant Pushti"

क्यूँ भटकती हो एक श्रद्धा ले कर

यह व्रज रज की प्रीत विरह वन में

अपनी साँस को छू ले

अपनी धडकन को छू ले

अपना विश्वास को छू ले

अपनी पुकार को छू ले

अपनी प्रीत को छू ले

शायद

यही तुम्हें व्रज प्रियतम मिलादे

"Vibrant Pushti"
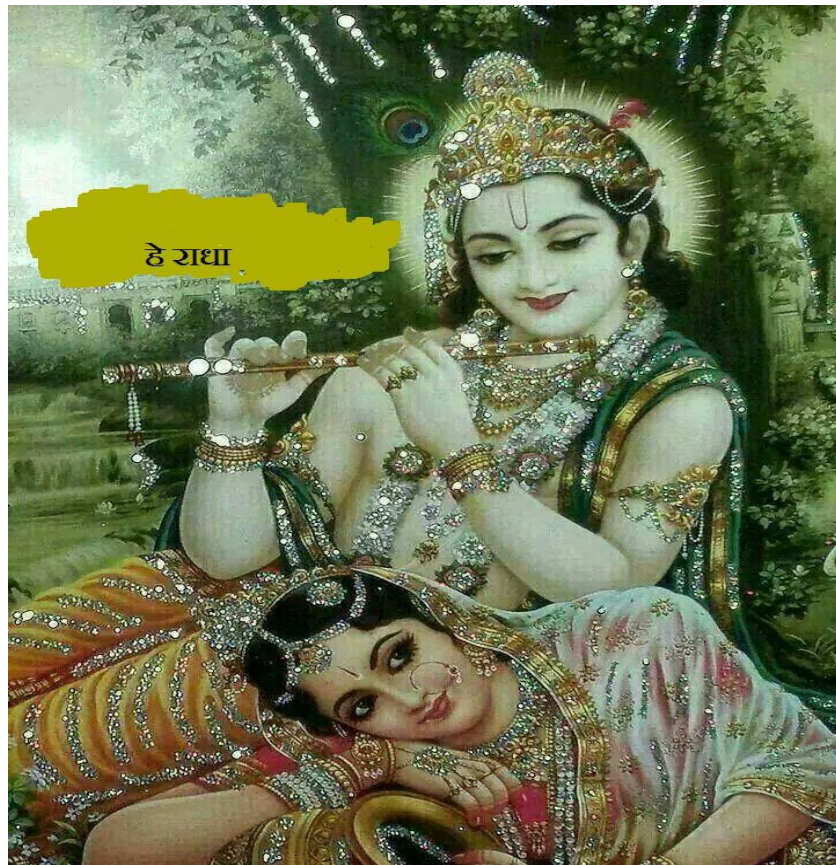
हर धूलि में है किसीका स्पर्श

हर नजर में है किसीकी तस्वीर

हर साँस में है किसीकी ज्योति

हर पुकार में है किसीका इंतजार

हर डग में है किसीका साथ

जो हर रीत से थामता है तुम्हारा हाथ

"Vibrant Pushti"
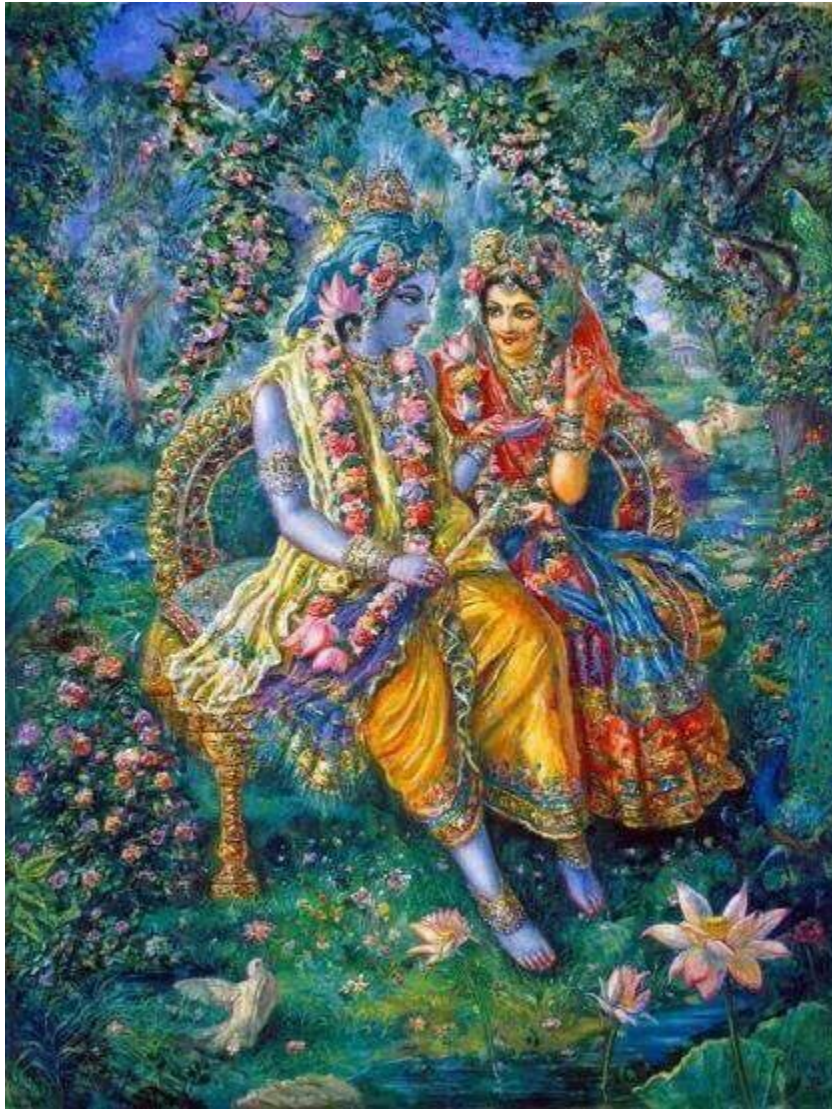
"श्री कृष्ण" यह धरती छोड कर क्यूँ गये?

"श्री कृष्ण" ने मृत्यु का स्वीकार क्यूँ किया?

मानव से महा मानव - भगवान, परमात्मा में परिणिमित "श्री कृष्ण" ने यह भूमा का त्याग क्यूँ किया?

हर एक मानव को यह गहन क्रिया समझनी आवश्यक है।

अपने आप को इतना टटोलो,

खुद को इतना विचलित करदो,

अपने आप को निचोड दो,

क्या है यह? मुझसे यह क्यूँ जुडा है?

"Vibrant Pushti"

कंकर कहे कृष्ण कृष्ण
रज कहे राधा राधा
कीटक कहे कान्हा कान्हा
वन कहे बनवारी बनवारी
गूँज कहे गिरधारी गिरधारी
बूँद कहे बाँके बिहारी
घन कहे घनश्याम श्याम
निकुंज कहे नटखट कान्ह
गौआँ कहे गोपाल गोपाल
गोपि कहे गोविंद गोविंद
पथ कहे पाथेय पाथेय
नाद कहे श्री नाथ श्री नाथ
मन कहे मोहन मोहन
तन कहे तिरछे मदन
वृक्ष कहे वल्लभ वल्लभ
पगडंड कहे परिकर गिरिवर
मौन कहे माधव माधव
धडकन कहे द्वारकाधीश
नैनमूंद कहे मुकुंद मुकुंद
साँस कहे साँवरिया साँवरे
प्रीत कहे प्रियतम प्यारे
पंकज कहे प्रियवर राधावर
"Vibrant Pushti"

कितना अदभुत है यह ब्रह्मांड!

कितनी अदभुत है यह सृष्टि!

कितना अदभुत है यह जगत!

कितनी अदभुत है यह प्रकृति!

कितना अदभुत है यह संसार!

कितनी अदभुत है यह संस्कृति!

कितना अदभुत है यह धर्म!

कितनी अदभुत है यह धरती!

कितना अदभुत है यह आसमान!

कितना अदभुत है यह जन्म!

कितनी अदभुत है यह मृत्यु!

कितना अदभुत है यह नैन!

कितनी अदभुत है यह दृष्टि!

कितना अदभुत है यह मन!

कितनी अदभुत है यह मानसी!

कितना अदभुत है यह जीवन!

कितनी अदभुत है यह जीवन धारा!

कितना अदभुत है श्री कृष्ण!

कितनी अदभुत है श्री राधा!

कितना अदभुत है श्याम!

कितनी अदभुत है श्यामा!

कितना अदभुत है गोपाल!

कितनी अदभुत है गोपि!

कितना अदभुत है साँवरिया!

कितनी अदभुत है श्यामली!

कितना अदभुत है श्री वल्लभ!

कितनी अदभुत है श्री पुष्टि!

कितना अदभुत है गिरिराज!

कितनी अदभुत है यमुना!

कितना अदभुत है अष्टसखा!

कितनी अदभुत है भक्ति!

कितना अदभुत है शरण!

कितनी अदभुत है प्रीत!

कितना अदभुत है स्पंदन!

कितनी अदभुत है मेरी............

"Vibrant Pushti"

हे कान्हा!

कैसा है रे तु!

धरती का आँचल जैसा

आकाश की अनंता जैसा

सागर की स्वीकृति जैसा

पवन की मादकता जैसा

सूरज की तीव्रता जैसा

माँ की ममता जैसा

पिता की शिस्तता जैसा

पुत्र की सेवा जैसा

पत्नी का विश्वास जैसा

मनुष्य जीवन की कर्मथा जैसा

धर्म का सिद्धांत जैसा

प्रीत का आनंद जैसा

पंकज की विरहता जैसा

रज रज की उत्तेजना जैसा

"Vibrant Pushti"

छलके तेरे नैनन से प्रीत बूँद

बरसे तेरे नैनन से प्रीत बिरह बूँद

पलकें तेरे नैनन खींचे प्रीत तस्वीर

तरसे तेरे नैनन खींचे प्रीत तकदीर

झुके तेरे नैनन करें प्रीत ऐकरार

मूंदे तेरे नैनन करें प्रीत इंतजार

अपलक तेरे नैनन गायें प्रीत गीत

तिरछे तेरे नैनन करें प्रीत मिलन संकेत

बंध तेरे नैनन तडपायें यादें प्रीत तरंग

फरके तेरे नैनन भटकायें प्रीत विरह रंग

कैसा है रे कान्हा!

तेरे नैनन चुरायें प्रीत दिल मधुर रस अमृत

"Vibrant Pushti"

"राधाष्टमी" प्रश्चयात "श्रीराधाजी" की हर सखी का प्राकट्य हो जाता है।

क्यूँ?

नहीं सेवा के लिए

नहीं कोई माध्यम के लिए

नहीं कोई वास्ता के लिए

नहीं कोई धारणा के लिए

नहीं कोई संबंध के लिए

नहीं कोई संकेत के लिए

नहीं कोई रीत के लिए

नहीं कोई सर्जन के लिए

नहीं कोई बंधन के लिए

नहीं कोई सखावत के लिए

नहीं कोई सखी कृति के लिए

नहीं कोई सखा भाव के लिए

नहीं कोई सखी सहारे के लिए

नहीं कोई सखी सहेली के लिए

हर चरित्र को पहचानना ही है

हर ज्ञान भाव को समझना ही है

हर प्रीत रीत को स्पर्श करना ही है

हर विचार कृति को सूक्ष्मता से ही जगाना ही है

हर लीला को अपनी आत्मीय ज्योत से प्रीत दीपक जलाना ही है

हर प्रीत विरह बास्प को साँसों से घुटना ही है

हर प्रीत मिलन रस को अपने अधर से पीना ही है

हर प्रीत शृंगार रुप में साँवरा रंग से रंगाना ही है

हर प्रीत अपलक नैन से प्रियतम के दिल में समाना है

"राधा"

"Vibrant Pushti"
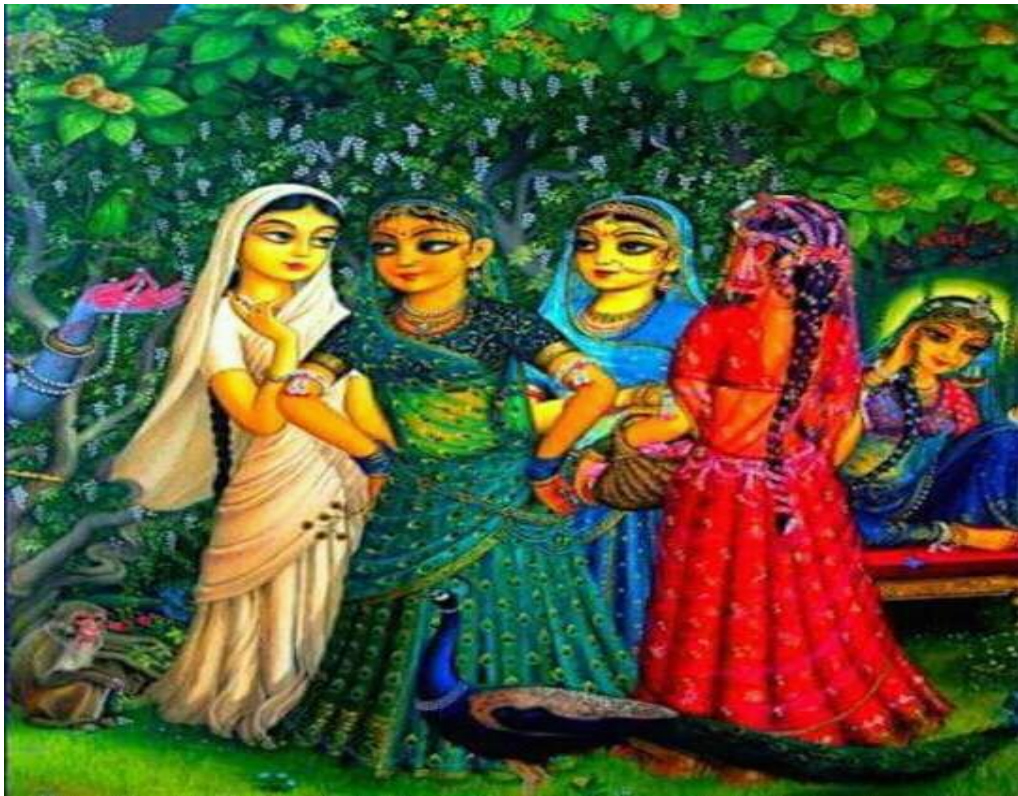
अरी सखी ! मंगल गाओ रे !

अरी सखी ! निकुंज सजावो रे !

अरी सखी फूल बिखराओ रे !

आज पिया मेंरे प्रेम द्वार पधारे रे !

"राधा" अलौकिक उर्जा

"राधा" अलौकिक उर्मि

"राधा" अलौकिक स्पंदन

"राधा" अलौकिक तीव्रता

"राधा" अलौकिक उत्तेजना

"राधा" अलौकिक उमंग

"राधा" अलौकिक संवेदना

"राधा" अलौकिक तृष्णा

"राधा" अलौकिक झंखना

"राधा" अलौकिक गूँज

"राधा" अलौकिक धून

"राधा" अलौकिक रज

"राधा" अलौकिक स्पर्श

"राधा" अलौकिक बूँद

"राधा" अलौकिक किरण

"राधा" अलौकिक साँस

"राधा" अलौकिक रंग

"राधा" अलौकिक तरंग

"राधा" अलौकिक सर्जन

"राधा" अलौकिक मर्जन

"राधा" अलौकिक कूंजन

"राधा" अलौकिक गर्जन

"राधा" अलौकिक पूजन

"राधा" अलौकिक मिलन

"राधा" अलौकिक वंदन

"राधा" अलौकिक थान

"राधा" अलौकिक तान

"राधा" अलौकिक ज्ञान

"राधा" अलौकिक तन

"राधा" अलौकिक मन

"राधा" अलौकिक जन्म

"राधा" अलौकिक सेवक

"राधा" अलौकिक सेवा

"राधा" अलौकिक धारा

"राधा" अलौकिक धर्म

"राधा" अलौकिक प्रेम

"राधा" अलौकिक उल्फत

"राधा" अलौकिक प्यार

"राधा" अलौकिक विरह

"राधा" अलौकिक प्रीत

"राधा" अलौकिक प्रियतम

"राधा" अलौकिक प्रिया

"राधा" अलौकिक साँवरा!

"राधा" अलौकिक कान्हा!

"राधा" अलौकिक श्याम!

"राधा" अलौकिक गोपाल!

"राधा" अलौकिक मोहन!

"राधा" अलौकिक कन्हैया!

"राधा" अलौकिक घनश्याम!

"राधा" अलौकिक गोविंद!

"राधा" अलौकिक गिरधर!

"राधा" अलौकिक शामळा!

"राधा" अलौकिक मदन!

"राधा" अलौकिक मुरलीधर!

"राधा" अलौकिक बाँके बिहारी!

"राधा" अलौकिक दामोदर!

"राधा" अलौकिक मुकुंद!

"राधा" अलौकिक माधव!

"राधा" अलौकिक कृष्ण!

"राधा" अलौकिक पंकज शरण!

"Vibrant Pushti"

क्यूँ होते है ऐसे नैन

जो सारी धडकन हर जाते है।

क्यूँ होते है ऐसे अधर

जो सारे मधुर रस पी जाते है।

क्यूँ होते है ऐसे शृंगार

जो सारे तन को रंग देते है।

क्यूँ होते है ऐसे ऐकरार

जो सारे जीवन को अमृत भरते है।

क्यूँ होते है ऐसे मिलन

जो सारे यादों की महक होती है।

क्यूँ होते है ऐसे विरह

जो सारे प्रीत की धारा बरसाती है।

"Vibrant Pushti"
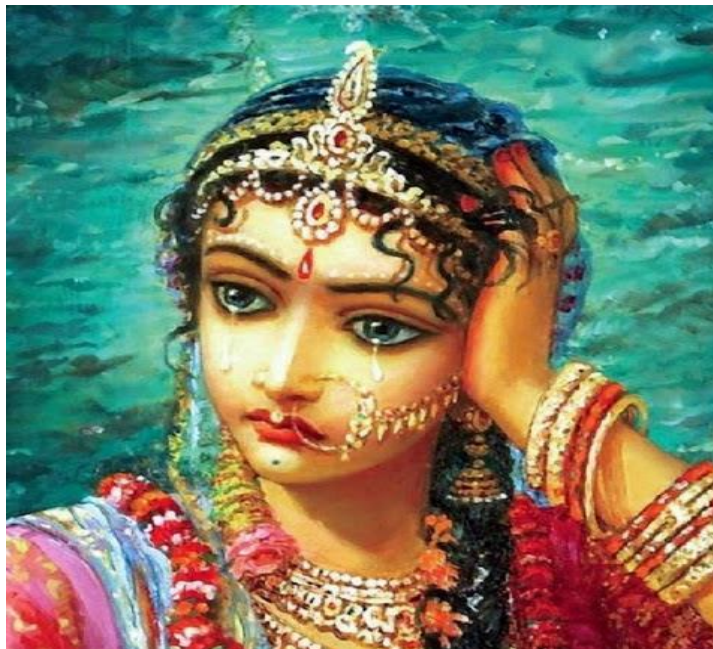
हे जागो सोने वालों!

अरे आला रे आला गोविंदा आला

अब हम हो जाये ब्रज की बाला

खेलेंगे मिल कर रास लीला

चूराये प्रीत से दिल की अठखेलियाँ

आ रहा है मेरे प्रियतम साँवरिया!

अरे आला रे आला गोविंदा आला

अब हम हो जाये गोकुल के ग्वाला

खेलेंगे मिल कर माखन चोरी लीला

लूटाये संसार की दामन ठीला

आ रहा है मेरा बंसी बजैया!

अरे आला रे आला गोविंदा आला

अब हम हो जाये यमुना की धारा

नटखट लाला रचेंगे निकुंज लीला

पुष्टि भक्ति रीत की प्रकटेगी सेवा

आ रहा है मेरा कृष्ण कन्हैया!

"Vibrant Pushti"

ओय!

उनकी पहली नजर के तीर

नैनन में ज्योति चमक गयी

होठों पर पंखुडि खिल गयी

कानों में सरगम गूँज गयी

धडकन में सुरखी जाग गयी

मन में मधुरता व्याप गयी

तन में स्पंदन रोमांच गयी

साँस में सुगंध बस गयी

दिल में प्रीत उत्कर्ष गयी

मेरे जीवन से नाम जुड गयी

"कान्हा"

ओहहहह कान्हा!

"Vibrant Pushti"

हे कृष्ण! कितनी सर्वोतम कृपा है मुझ पर

मैं तुम्हें जगाऊँ

हे कृष्ण! कितनी सर्वाधिक ममता है मुझ पर

मैं तुम्हें संभालुँ

हे कृष्ण! कितनी विशुद्ध रीत है मुझ पर

मैं तुम्हें पुकारुँ

हे कृष्ण! कितनी पवित्र करुणा है मुझ पर

मैं तुम्हें अपनाऊँ

हे कृष्ण! कितनी मधुर ममता है मुझ पर

मैं तुम्हें सुश्रुसाऊँ

हे कृष्ण! कितना सर्वोच्च विश्वास है मुझ पर

मैं तुम्हें प्रीत करुँ

ओहहहह मेरे श्याम!

"Vibrant Pushti"

प्रियतम कितना ही याद करे
प्रियतम कितना ही पुकार करे
प्रियतम कितना ही इंतजार करे
प्रियतम कितना ही ख्याल करे
प्रियतम कितनी ही रीत अपनाये
प्रियतम कितनी ही आश बाँधे
प्रियतम कितनी ही गुहार लगाये
प्रियतम कितनी ही कल्पना करे
हम नहीं जानने वाले, पहचानने वाले,
हम तो ऐसे रहेंगे, ऐसा ही करेंगे।
अच्छा!
तो हमारी भी सुनलों!
हर नजर की नजर होती है,
हर विचार की संकल्पना होती है
हर रीत की रीत होती है
हर ख्याल की सीमा होती है
हर इंतजार की हवेलना होती है
हर आश की प्यास होती है
हर गुहार की शिस्तता होती है
हर कल्पना की मर्यादा होती है
अब तुम कहो? क्या मेरा हाल है?
" Vibrant Pushti "

कुछ करते करते कुछ याद आ गया और राधाजी उछल पडी और दौडी यमुना तट की ओर। उबड खाबड रास्ते पर वह पवन की लहर जैसी दौड रही थी, न कोई सुध थी न कोई खबर थी, बस दौडी जा रही थी।

जैसे दूर से कदंब की डाली दिखायी दिया, तन में अधिक जोर जागा, पैर में कूदने और तीव्र गति से दौडने की उत्कंठा उठी, वह तेज गति से दौडने लगी,

नजर में केवल एक ही स्मृति "कान्हा"!

तन में केवल एक ही भाव "कान्हा"!

मन में केवल एक ही तडप "कान्हा"!

जैसे कदंब के पेड की छोर पीला पीतांबर लहराते देखा,

उनकी साँस थमने लगी,

नयन बरस ने लगे,

होठ तरस ने लगे,

तन लडखडाने लगे,

पीला पीतांबर के पास जैसे पहुँचने लगी,

नयन आकुल व्याकुल होने लगे

तन थरथराने लगे

मन स्थिर होने लगा

नयन में एक ही तस्वीर - पीला पीतांबर

मन में एक ही आकृति - पीला पीतांबर

धडकन में एक ही राग - पीला पीतांबर

तन में एक ही आग - पीला पीतांबर

पीला पीतांबर - क्या था?

पीला पीतांबर की लहराई राधाजी के तन मन और प्रीत को आकर्षित करने लगें, राधाजी के मुखारविंद पर आनंद की झलक और धडकन में मिलन की तीव्रता गहराई से उत्कंठ कर रही थी। एक ही विचार जागते थे कब मिलू, कब लिपटू, कब थामें मोरा साँवरिया!

नजर अपलक पीला पीतांबर से

साँस तेज मिलने पीला पीतांबर से

चित्त एक छूने पीला पीतांबर से

तन समर्पित करने पीला पीतांबर से

ओहहह! पवन की एक झोके ने पीला पीतांबर को जोर से उडाया तो

नयन में आ बसा श्यामल मुखडा

तन पर छा गया श्यामल रंग सा

दिल में जाग गया श्यामल ज्योत सा

प्रीत प्रीत की विरहता लूट लिया श्यामल मुखडा

" Vibrant Pushti "

कृष्ण तु मेरा है।

सच! तब तो तुम्हें देखा।

यह सत्य है।

हमारा यह प्रश्न इतना गूढ है।

सच

जो समझे वह नाचें।

कैसे कहे कृष्ण से तु मेरा है?

" Vibrant Pushti "

सकारात्मक स्पंदन पुष्टि - कान्हा

"Vibrant Pushti"

Inspiration of vibration creating by experience of

life, environment, real situation and fundamental elements

"Vibrant Pushti"

53, Subhash Park, Sangam Char Rasta

Harni Road, City: Vadodara - 390006

State: Gujarat, Country: India

Email: vibrantpushti@gmail.com

" जय श्री कृष्ण "